

# मेघनाद साहा : भारतीय भौतिक विज्ञानी

(2 अक्टूबर 1893 : 16 फरवरी 1956)

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें, पढ़वाएं और बटवायें)



सुगत सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,

लखनऊ, (उ.प्र.) – 16.02.2022

अभिनेत्री : अनामिका सिंह

लेखक : ए के सिंह

मोबा : 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुध्दाय, जय भीम,  
जय अर्जक, जय जीवी...

.....

तैलिक समाज से बताए जाने वाले, मेघनाद साहा सुप्रसिद्ध भारतीय खगोलविज्ञानी (एस्ट्रोफिजिसिस्ट) थे। वे साहा समीकरण के प्रतिपादन के लिये प्रसिद्ध हैं। यह समीकरण तारों में भौतिक एवं रासायनिक स्थिति की व्याख्या करता है। उनकी अध्यक्षता में गठित विद्वानों की एक समिति ने भारत के राष्ट्रीय शक पंचांग का भी संशोधन किया, जो 22 मार्च 1957 (१ चैत्र १८७९ शक) से लागू किया गया। इन्होंने साहा नाभिकीय भौतिकी संस्थान तथा इण्डियन एसोसियेशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ साइन्स, नामक दो महत्वपूर्ण संस्थाओं की स्थापना की।

मेघनाद साहा का जन्म ढाका से 45 कि.मी. दूर शिओरताली गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम जगन्नाथ साहा तथा माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। गरीबी के कारण साहा को आगे बढ़ने के लिये बहुत संघर्ष करना पड़ा। उनकी आरम्भिक शिक्षा

ढाका कॉलेजिएट स्कूल में हुई। इण्टेंस में पूर्वी बंगाल में प्रथम रहे। इसके बाद वे ढाका कालेज में पढ़े। वहीं पर विना से डाक्ट्रेट करके आए। प्रो. नगेन्द्र नाथ सेन से उन्होंने जर्मन भाषा सीखी। कोलकाता के प्रेसिडेन्सी कॉलेज से भी शिक्षा ग्रहण की। 16 जून 1918 को उनका विवाह राधा रानी राय से हुआ। 1920 में उनके 4 लेख सौरवर्ण मंडल का आयनीकरण, सूर्य में विद्यमान तत्वों पर, गैसों की रूप विकिरण समस्याओं पर तथा तारों के हार्वर्ड वर्गीकरण पर फिलासाफिकल मैगजीन में प्रकाशित हुए। इन लेखों से पूरी दुनिया का ध्यान साहा की ओर गया। सन् 1923 से सन् 1938 तक वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक भी रहे। इसके उपरान्त वे जीवन पर्यन्त कलकत्ता विश्वविद्यालय में विज्ञान फैकल्टी के प्राध्यापक एवं डीन रहे। सन् 1927 में वे रॉयल सोसायटी के सदस्य (फेलो) बने। सन् 1934 की भारतीय विज्ञान कांग्रेस के वे अध्यक्ष थे। साहा इस दृष्टि से बहुत भाग्यशाली थे, कि उनको प्रतिभाशाली अध्यापक एवं सहपाठी मिले। उनके विद्यार्थी जीवन के समय जगदीश चन्द्र बसु एवं प्रफुल्ल चन्द्र रॉय अपनी प्रसिद्धि के चरम पर थे। सत्येन्द्र नाथ बोस, ज्ञान घोष एवं जे एन मुखर्जी उनके सहपाठी थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रसिद्ध गणितज्ञ अमिय चन्द्र बनर्जी उनके बहुत नजदीकी रहे। उनका देहान्त दिल्ली में योजना भवन जाते समय हृदयाघात से हुआ।

उन्होंने देश की आजादी में भी योगदान दिया था। अंग्रेज सरकार ने वर्ष 1905 में बंगाल के आंदोलन को तोड़ने के लिए जब इस राज्य का विभाजन कर दिया गया, तो मेघनाथ भी इससे अछूते नहीं रहे। उस समय पूर्वी बंगाल के गर्वनर सर बामफिल्डे फुल्लर थे। अशांति के इस दौर में जब फुल्लर, मेघनाद के ढाका कालिजियट स्कूल में मुआयने के लिए आए, तो मेघनाद ने अपने साथियों के साथ फुल्लर का बहिष्कार किया। नतीजतन मेघनाथ को स्कूल से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। प्रेसीडेंसी कालेज में पढ़ते हुए ही मेघनाद क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। उस समय आजादी

के दीवाने नौजवानों के लिए अनुशीलन समिति से जुड़ना, देश सेवा का पहला पाठ माना जाता था। मेघनाद भी इस समिति से जुड़ गए। बाद में मेघनाद का संपर्क नेताजी सुभाष चंद्र बोस और देश के पहले राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद से भी रहा।

-----  
**(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें, पढ़वाएं और बटवायें)**

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,

लखनऊ (उ.प्र.)

अभिनेत्री : अनामिका सिंह

लेखक : ए. के. सिंह

7355175480